I J R S S I S, Issue (IX), Vol. (I), May 2023: 290-294
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No. : MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

पाओलो फेरे की विमुक्तिकारी शिक्षा

मनीष पटेल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग)
रजत कॉलेज लखनऊ (उ०प्र०)

Communicated : 04.02.2023	Revision : 09.03.2023 Accepted : 07.04.2023	Published: 30.05.2023

सारांश :
मनुष्य की योग्यता, उसके आचरण में अभिव्यक्त होती है जो संसार को रूपान्तरित भी करता है और व्यक्त भी करता है। मनुष्य का आचरण उसका कर्म भी है और उसकी भाषा भी। भाषा, संस्कृति का वाहक होती है, इसलिये भाषा पर विषेष ध्यान दिया जाता है। कहना न होगा कि साक्षरता की भी सांस्कृतिक भूमिका होती है भाषा के माध्यम से जिन लोगों की आकांक्षा और इच्छा की अभिव्यक्ति होती है, भाषा के विकास के साथ उसको अर्थ देने का काम भी उन्हीं को करना चाहिए। बाल्यकाल में ही सामंतवादी, पूँजीवादी, साम्राज्यवादी, नस्लवादी और फासीवादी उत्पीड़न के अलग–अलग रूपों से उनका परिचय हो गया था। उनको अपने परिवार की वास्तविक व कठोर परिस्थितियों का भी प्रत्यक्ष अनुभव हो गया था। इन्हीं समस्याओं से जूझते हुये अपनी षिक्षा पूर्ण की तथा शोध उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् 1959 में वे रेसिफे विष्वविद्यालय में षिक्षा के इतिहास तथा दर्षन के आचार्य नियुक्त हुये। फेरे के चिन्तक जीवन के विकास को लैटिन अमेरिका के क्रान्तिकारी जन आन्दोलन ने बहुत गहराई तक प्रभावित किया है।

महत्वपूर्ण शब्द : पाओलो फेरे, विमुक्तिकारी शिक्षा

प्रस्तावना :

शिक्षा वह है जो व्यक्ति में उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा नैतिक परिस्थितियों की समझ विकसित करे। व्यक्ति को उसकी स्थिति, उसके अधिकार व कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाये। शिक्षा वह है जो मानव को विशेषत: शोषित वर्ग को ''कल्चर ऑफ साइलेन्स'' से बाहर निकाले। व्यक्ति राष्ट्र के विकास में, समाज के विकास में, मानवता के विकास में व सर्वप्रथम स्वयं के विकास में अपनी भूमिका को समझे व उसका निर्वहन करे। इस प्रकार की समझ व जागरूकता को ही फेरे ने संचेतनीकरण कहा है तथा संचेतनीकरण के द्वारा ''कल्चर ऑफ साइलेन्स'' से मुक्त कराने वाली शिक्षा ही 'विमुक्तकारी शिक्षा' कहलाने की पात्र होगी। ''संचेतनीकरण संचेतनता लाने की प्रक्रिया है लेकिन चेतना वास्तविकता को परिवर्तित करनें वाली शक्ति की अनुभूति है।'' अर्थात् जब व्यक्ति को यह आभास हो जाये कि अ बवह अपनी परिस्थितियों से लड़ सकता है व उन पर विजय प्राप्त कर उन्हें अनुकूल बना सकता है यह आभास ही संचेतनता है।

'शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् व्यक्ति यह अनुभूति करें और कहें कि ''अब मैंने अनुभव किया है कि मैं एक शिक्षित मानव हूँ, मैं कार्य करूँगा और अब अपने कार्यों द्वारा विश्व में परिवर्तन लाऊँगा।'' ऐसी भावना को जागृत करने वाली शिक्षा ही संचेतनकारी व विमुक्तकारी शिक्षा कहलाने की पात्र है।'

''मुक्ति जीती जाती है न कि उपहार में प्राप्त होती है। इसके लिए निरन्तर प्रयासरत व उत्तरदायी रहना चाहिए। ये कोई विचार नहीं है जो व्यक्ति को बाहर से दिया जाता है और न ही ये ऐसा विचार है जो धर्म व विश्वास से आता

है वरन् यह एक ऐसी परिस्थिति है जो मानव विजय द्वारा उत्पन्न करता है।''

यह विचार १९ सितम्बर १९२१ को ब्राजील में जन्में महान दार्शनिक शिक्षा शास्त्री, राजनीतिक विचारक पाओलो फेरे के हैं। पाओलो फेरे अमेरिका के सबसे घनी आबादी वाले देश ब्राजील के रेसिफे नामक नगर के एक निम्न मध्यवर्गीय ईसाई परिवार से थे। बाल्यकाल में ही सामंतवादी, पूँजीवादी, साम्राज्यवादी, नस्लवादी और फासीवादी उत्पीड़न के अलग–अलग रूपों से उनका परिचय हो गया था। उनको अपने परिवार की वास्तविक व कठोर परिस्थितियों का भी प्रत्यक्ष अनुभव हो गया था। इन्हीं समस्याओं से जूझते हुये अपनी शिक्षा पूर्ण की तथा शोध उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् १९५९ में वे रेसिफे विश्वविद्यालय में शिक्षा के इतिहास तथा दर्शन के आचार्य नियुक्त हुये। फेरे के चिन्तक जीवन के विकास को लैटिन अमेरिका के क्रान्तिकारी जन आन्दोलन ने बहुत गहराई तक प्रभावित किया है। ब्राजीलवासी फेरे का मुल्क भी इन आन्दोलनों से अछूता नहीं था। १९५० के बाद ब्राजील में जनआन्दोलन तेज होते गये और उनमें वामपंथी शक्तियों की भूमिका बढ़ती चली गई। इस दौर में अनके लैटिन अमेरिकी बुद्धिजीवी भी मार्क्सवाद की ओर आकृष्ट हुये तथा उसे अपनाया और पाओलो फेरे भी उनमें से एक थे।

फेरे का क्रान्तिकारी अभियान :

अपने देश से साक्षरता अभियान से फेरे अत्यधिक घनिष्ठ रूप से जुड़ गये थे, तथा विभिन्न कार्यक्रमों की अध्यक्षता एवं शिक्षा विभागों में उत्तरदायित्वपूर्ण पद्भार भी संभालने लगे थे। राष्ट्रीय साक्षरता अभियान के तहत फेरे ने अपने देश के विभिन्न भागों का दौरा किया। उन्होंने काम के दौरान उत्पीड़न के विभिन्न रूपों को और अधिक निकट तथा गहराई से देखा–परखा तथा उनका विश्लेषण किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि 'शिक्षा भी राजनीति है और जिस प्रकार राजनीति वर्गीय होती है, उसी तरह शिक्षा भी वर्गीय होती है।'

फेरे का कहना था कि उनका शिक्षा दर्शन आज की प्रचलित धारा के प्रतिकूल है। उन्होंने साक्षरता के प्रसार को एक प्रकार की सांस्कृतिक कार्यवाही माना। उदारवादी शिक्षा या लिबरल राजनीतिक चिन्तन प्रणाली में बहुत समय से साक्षरता को मनुष्य की गरिमा का आवश्यक अंग बताया जाता रहा है। इसी सिलसिले में साक्षरता को व्यक्ति स्वातंत्र्य के साथ जोड़ने की परम्परा मजबूत हो गयी है और पाओलो फेरे ने प्रसार का एक प्रभावी रास्ता बताया और यही उनका प्रमुख योगदान है। फेरे लिखित विख्यात क्रान्तिकारी पुस्तक ''उत्पीड़ितों का शिक्षा–शास्त्र (दलितों या अपवंचितों का शिक्षण विज्ञान (Pedagogy of the oppressed), को यूनेस्को ने जनशिक्षा कार्यक्रमों के लिये मार्गदर्शिका के रूप में मान्यता दी। फेरे का चिन्तन, भूमण्डलीय सन्दर्भ में या तीसरी दुनिया के वि–उपनिवेशीकरण या सम्पूर्ण मानव जाति के लिये सच्ची मुक्ति के द्वार खोलने में सक्षम माना जा सकता है '' विकास तथा सामाजिक परिवर्तन अध्ययन केन्द्रों (Centre for the Study of Development & Social Change) से जुड़कर प्रगतिशील परिवर्तनकारी, विप्लवी शिक्षा प्रदाता (Pedagogue for liberation) के रूप में फेरे का एकमात्र सार्वभौम सपना था– ''शिक्षा के द्वारा मुक्ति''।

प्रौढ़ साक्षरता की प्रक्रिया : मुक्ति की सांस्कृतिक कार्यवाही व संचेतीकरण (विवेकीकरण)रू

मुक्ति की सांस्कृतिक कार्यवाही, अपने आप में शिक्षा की एक प्रक्रिया है। खास तौर से इसका महत्व उस समय और बढ़ जाता है। कोई प्रौढ़ों को अक्षर ज्ञान करा रहा है। शिक्षा की इस प्रक्रिया में निष्क्रिय छात्र की बजाये वे शुरु से रचनात्मक भागीदार की भूमिका में होते हैं। क्योंकि

सीखने की प्रक्रिया, रटने का पर्याय नहीं है। जिसमें दिये गये शब्दों, पदों और वाक्यों को बराबर दुहराया जाता है। फेरे जिस सांस्कृतिक कार्यवाही की बात करते हैं वह ऐतिहासिक विवके से अनुप्राणित होने के कारण यह आशा जगाता है कि साक्षरता का यांत्रिक और शिक्षा का व्यक्तिवादी स्वरूप बलदेगा। फेरे के अनुसार समाज की दयनीय स्थिति का कारण कल्चर ऑफ साइलेन्स (मूक संस्कृति) है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी दयनीय परिस्थिति को अपनी नियति मानकर सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है। अपनी परिस्थिति के कारणों पर न तो विचार करता है और न ही उसे परिवर्तित करने की दिशा में विशेष प्रयास करता है। फेरे इस निष्क्रियता का प्रमुख कारण अशिक्षा को व तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था को मानते हैं। तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था को फेरे ने ''बैंकिंग सिस्टम ऑफ नॉलेज'' कहा जिसमें सर्वज्ञ व चिन्तनशील समझे जाने वाले अध्यापक के द्वारा छात्रों के ऊपर ज्ञान को थोपाजाता है। फेरे ने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को ''शिक्षक केन्द्रित'' कहा क्योंकि शिक्षक द्वारा पूरी शिक्षा प्रक्रिया को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है, जिसमें छात्रों की सहभागिता बहुत कम होती है। प्राय: शिक्षक अपने ज्ञान का प्रभुत्व स्थापित करने के बजाय अपने पद का प्रभुत्व स्थापित करते हैं। फेरे के अनुसार शिक्षक केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था व्यक्ति में सूचनाओं का संग्रह कर सकती है किन्तु उनकी दयनीय परिस्थितियों से उन्हें मुक्त नहीं करा सकती हैं। इस शिक्षा व्यवस्था में उच्च वर्ग के लोगों द्वारा दी जा रही जानकारी का हस्तान्तरण मात्र किया जाता है और तत्कालीन परिस्थितियों को बनाये रखने का प्रयास किया जाता है जो कि उच्च वर्ग के लिये लाभदायक होती है। परिणामस्वरूप बालक उन्हीं तथ्यों व जानकारियों को जानता व रटता है तथा एक निष्क्रिय श्रोता की तरह उन्हें स्वीकार कर लेता है। इसे फेरे ने ''डोमेस्टिकेटिंग एजूकेशन'' कहा है। यह शिक्षा शिक्षार्थी के स्वयं सोचने समझने की क्षमता समाप्त कर देती है तथा व्यक्ति में अपनी सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों की आलोचनात्मक समझ विकसित होने से रोकती है जिससे धीरे–धीरे वे अपनी परिस्थितियों के गुलाम हो जाते हैं व उसे परिवर्तित करने के अयोग्य सिद्ध हो जाते हैं। जबकि शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति में अन्तर्निहित सभी गुणों व क्षमताओं का प्रगतिशील विकास है ऐसे में वर्तमान ''डोमेस्टिकेटिंग एजूकेशन'' को शिक्षा नहीं कहा जा सकता है। फेरे के अनुसार –

बैंकिंग प्रणाली शिक्षा के विरुद्ध फेरे ने एक नवीन शिक्षा प्रणाली विकसित की। इस परिप्रेक्ष्य में पारस्परिक विद्यालयों के स्थान पर सांस्कृतिक समूह की परिकल्पना को बढ़ावा दिया जाता है। शिक्षक के स्थान पर संयोजक, लेक्चर के स्थान पर समूह प्रतिभागी और सुनियोजित विस्तृत पाठ्यक्रम के स्थान पर जीवन के वास्तविक अनुभवों से जुड़े शब्द, वाक्य, विचार या चित्र आदि के द्वारा प्रतिभागी संचेतनता की ओर अग्रसर होते हैं।

सांस्कृतिक समूहों में सीखने की प्रक्रिया में कोऑर्डिनेटर तथा समूह के सदस्यों की परस्पर भागीदारी ''डॉयलॉग'' (क्पंसवहपबंस डमजीवक) के माध्यम से होती है। (ब्नसजनतंस ळतवनचे) प्रतिभागियों को उनकी रूचि व उनकी वास्तविक परिस्थितियों से जुड़ी विषयवस्तु पर चर्चा–परिचर्चा करने हेतु प्रोत्साहित करता है। चर्चा की विषय वस्तु का चयन समूह द्वारा किया जाता है न कि संयोजक द्वारा। (सर्वप्रथम इस विधि का १९६२ में प्रयोग किया गया, जिसमें ३०० कृषकों को ४५ दिन में पढ़ना–लिखना सिखाया गया) उनके अनुसार शिक्षा अनुकूलन भी कर सकती है क्योंकि मनुष्य अनिवार्यत: एक अनुकूलित प्राणी है।

फेरे की शिक्षण प्रणाली :

फेरे की शिक्षण प्रणाली द्वारा व्यक्ति न केवल लिखना–पढ़ना सीखता है वरन् समूह के सदस्यों से प्रस्तुत विषय वस्तु पर चर्चा–परिचर्चा करते हुए उसमें वातावरण के प्रति आलोचनात्मक समझ भी विकसित होती है। **फेरे** के अनुसार (१९७२)– ''सांसारिक मध्यस्थता द्वारा व्यक्ति एक–दूसरे को शिक्षित करते हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा विश्व को एक नवीन शक्ति प्राप्त होती है। यह कोई जादू नहीं है वरन् जब व्यक्ति अपने चारों ओर की वस्तुओं को समझता व नाम प्रदान करता है तो यह व्यक्ति द्वारा स्वयं को जानने अर्थात् आत्मज्ञान का एवं स्वयं की शक्तियों को पहचानने का ही एक ढंग है।'' लैटिन अमेरिका के गाँवों और नगरों की गंदी बस्तियों के लोगों के बीच जिन लोगों का सांस्कृतिक वर्चस्व पहले से कायम था, उसे चुनौती देने की कोशिश में फेरे ने लोगों को साक्षर बनाने के लिये अत्यन्त मौलिक और सफल शिक्षण पद्धति का विकास किया।

पाओलो फेरे आज हमारे समक्ष शिक्षा का ऐसा दर्शन पेश करते हैं जो सकारात्मक है और यह दर्शन लोगों की मुक्ति का साधन भी है तथा उन्हें ऐतिहासिक प्रक्रिया में भागीदारी के लिये सक्षम बनाता है। उनका शिक्षा दर्शन तीसरी दुनिया के वंचितों के साथ–साथ विकसित समाजों के गरीबों और वंचितों के लिये भी उतना ही सार्थक और प्रासंगिक है। तीसरी दुनिया से उठने वाली बहुत सी आवाजों में से एक आवाज के रूप में पाओलो फेरे की चुनौती पहली दुनिया के उत्पीड़ितों के साथ–साथ तीसरी दुनिया के लिये भी है, ताकि तीसरी दुनिया उस इतिहास की तथा उसके अमानवीय चरित्र की पुनः खोज करें और एक सच्चे मानवीय और सार्वभौम इतिहास की रचना के अभियान में शामिल हो जाये।

फेरे के विवेचनात्मक व रचनात्मक शिक्षाशास्त्र की प्रासंगिकता :

आज शिक्षा के समक्ष सबसे बड़ी राष्ट्रीय चुनौती है, उसका सामाजिक सन्दर्भ में प्रासंगिक होना, उसका लचीलापन होना तथा गुणवत्ता व एकरूपता का होना इस प्रयास में विभिन्न आयामों का होना भी आवश्यक है जैसे शिक्षा के लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति, व्यक्ति या छात्र का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, मानव विकास की प्रकृति तथा मनुष्य की सीखने की प्रक्रिया इत्यादि। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (२००५) एक ऐसा दस्तावेज है, जिसमें सामाजिक न्याय और समानता, समतामूलक तथा बहुलतावादी समाज के आदर्शों के रूप में शिक्षा के अति व्यापक उद्देश्य चिन्हित किये गये हैं। इसमें यह भी अंकित है कि आज के रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में ज्ञान सृजन के लिये अध्यापन अति आवश्यक हो गया है तथा उसके साथ ही साथ शिक्षण में विभिन्न रणनीतियों व गतिविधियाँ भी दृष्टिगत हो रही हैं।

कक्षा में या कक्षा के बाहर शिक्षक व शिक्षार्थी की अन्तःक्रिया विवेचनात्मक होनी आवश्यक है दोनो की सहभागिता एक सशक्त कार्यनीति के रूप में होनी चाहिये।

विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र अपने में एक सशक्त प्रक्रिया है तथा उसमें यह परिभाषित करने की ताकत होती है कि किसका ज्ञान स्कूल सम्बन्धी ज्ञान का हिस्सा बनेगा और किसकी आवाज उसे आकार देगी। छात्रों की क्षमतायें, सीखने का सामर्थ्य और ज्ञान, जिसे वे विद्यालय लेकर आते हैं वह भी अधिगम की संवृद्धि में बहुत महत्वपूर्ण है। वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के लिये यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यकचर्या, रूपरेखा (२००५) के दस्तावेज में यह भी उद्धृत है कि आज शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता है शिक्षा, शिक्षार्थी

केन्द्रित, शिक्षार्थी की स्वायत्तता शिक्षार्थी का सीखने में सक्रिय भागीदारी, सामाजिक सन्दर्भों के अनुभव सीखना, विवेचनात्मक व रचनात्मक सोच, बहुविध एवं विभिन्न अनुभव, बहु अनुशासनात्मक शैक्षणिक दृष्टि, संज्ञानात्मक शिक्षार्थन निर्वचन सृजन, बहुविध अभिव्यक्तियाँ इत्यादि प्रक्रियायें होनी आवश्यक हैं। इस महत्वपूर्ण दस्तावेज में चिन्हित रचनात्मक अधिगम की परिस्थितियाँ, कहीं न कहीं पाओलो फेरे के विचारों से संदर्भित व प्रासंगिक प्रतीत होती है जिसमें विद्यार्थियों के ज्ञान सृजन व आत्म अभिव्यक्ति के लिये शिक्षक एक उत्प्रेरक की भूमिका के लिये प्रतिबद्ध है। अत: आज आवश्यक है कि फेरे के विचार व्यवहार में आयें तथा शैक्षणिक आन्दोलन में सक्रिय भूमिका व पहचान प्रस्तुत करें।

सन्दर्भ :

Freire, Paulo (1972), *Pedagogy of the oppressed*, (Translated by Myra Bergman Ramos, Penguin Education, England).

Gerhardt, Heinz Peter (1997), *Paulo Freire, Thinkers on Education*, vol. 2 Unesco Publishing

Ivan D. Illich (1971), *Deschooling Society*, editor : Williem Vander Eyken; Penguin Education, England

Sen Nupur (2007), Paulo Freire : *A great Radical Thinker and a Utopian Pedagogue*, Indian Journal of Education & Research vol. 26, No. 2, July-Dec.

पण्डित सुरेष (2003), *मुक्ति का षिक्षाषास्त्र,* वर्ष – 10, अंक–2 अगस्त.

फेरे, पाओलो (1997) *प्रौढ़ साक्षरता,* अनुवादक–जवरीमल्ल पारख, ग्रंथ षिल्पी, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005, ''राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रषिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.